International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 76-78

अरुणाचल प्रदेश की आदी जनजाति व खड़ी बोली के जन्म संस्कार सम्बन्धी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन

विजय कुमार यादव

शोध छात्र, हिन्दी विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश, भारत।

सरांष

इस शोध पत्र में अरुणाचल प्रदेश की आदी जनजाति एवं खड़ीबोली के जन्म संस्कार सम्बन्धी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। लोकगीत किसी भी साहित्य का महत्वपूर्ण अंग होता है। मानव जीवन के हर एक छण के साथ लोकगीत का सम्बन्ध होता है। लोकगीत का मुख्य उद्देश्य समाज का मनोरंजन करने के साथ ही ज्ञान का भण्डार भी होता है।

मूल शब्द: आदी जनजाति, खड़ीबोली, संस्कार, लोकगीत, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, दशूटन, मुण्डन, कर्ण-छेदन, छठी, अन्नप्राशन

प्रस्तावना

1) गर्भाधान व पुंसवन संस्कार

जन्म संस्कार मानव जीवन का प्रारंभिक संस्कार है। बच्चा जब गर्भ में आता है उसके कुछ ही महीनें बाद से ही कोई न कोई अनुष्ठान प्रारंभ हो जाता है। बच्चे के गर्भाधान से लेकर जन्म तक की नौ महीनें की अवधि में जो भी अनुष्ठान किया जाता हैं वे सब जन्म संस्कार के अन्तर्गत आ जाते हैं। खड़ी बोली क्षेत्र में सबसे पहले गर्भाधान संस्कार को मनाया जाता है। आजकल इस संस्कार का प्रचलन हमारे समाज में न के बड़ाबर है। गर्भाधान संस्कार के पश्चात पुंसवन संस्कार होता है। पुंसवन संस्कार के अंतर्गत गर्भ में पल रहे शिशु को पुत्र के रुप में प्राप्त करने की कामना की जाती है। आमतोर पर गर्भाधान के दो- तीन माह बाद इस संस्कार को सम्पन्न किया जाता है। पुंसवन संस्कार के समय गाये जाने वाले गीतों में स्वप्न से सम्बन्धित गीत भी उपलब्ध हैं जिसका प्रतीक के रुप में अर्थ निकाले जाते हैं। प्रतीकात्मक रुप में पुंसवन से संबंधीत गीत इस प्रकार से है। इस गीत में बहु ने स्वप्न में हरी- हरी दूब, जौ का खेत लहरते हुए देखा है। वधु जो स्वयं अनुभवहीन है, अपनी अनुभवी सास से अपने स्वप्नों के संबंध में बताकर अपनी शंका का समाधान कराती है –

"सपने में जौ का खेत
हरी- हरी दूब लहरे लेय रे
सासू सपने का अरथ बताओं
अपनें में हरी- हरी दूब
जौ का खेत लहरे ले रहया
बहू होंगे तुम्हारे नन्दलाल
जौ का हरा- हरा खेत जो देखिये
सासू किस बिधि होंगे नन्दलाल
इसकू बी हमें बताइये
कोठे में सिर बहू, चुल्ह ही में टांग
आँखों में पट्टी बांधिये"।[1]

इसी प्रकार पुत्र की कामना करते हुए स्वप्न से संबंधित ओर एक गीत इस प्रकार से है–

"सासु सपने में अंबुआ का पेड़
तो झलर झलर करै
सुनियो मेरी सासु, कंवर जी की अम्मा
ए चतर जी की अम्मा री
सासु सुपने में अंबुवा का पेड़ तो झलर- झलर करे
चुपकर बहु मेरी चुपकर, बैरी ना सुने, दुसमन ना सुनैरी
बहु ये बड़े भाग हमारे, ललन जी के सोहले
कंवर जी की अम्मा, चतर जी की अम्मा"। [2]

गर्भिणी स्त्री को विभिन्न वस्तुएँ खाने की इच्छा होती है और इन इच्छाओं की पुर्ति पति और परिवार के सदस्य करते हैं। गर्भिणी स्त्री की उस काल की खान – पान संबंधी सभी इच्छाओं को 'दोहद' या 'साध' कहते हैं। इसके संबंध में खड़ीबोली प्रदेश में अनेक लोककथाएं प्रचित हैं। किस प्रकार पत्नी की इच्छा दुर्लभ वस्तुओं को खाने की होती है और पति अपने प्राण को संकट में डाल कर भी पत्नी की इच्छा पूरी करने की कोशिस करते देखे गये हैं। मुख्य रुप से इन गीतों में गर्भवती स्त्रियों की खानें में रुचि के बारे में ही अधिकतर गीत मिलता है। उदाहरण के रुप में एक गीत इस प्रकार से हैं –

"मेरा मन माँगे ताजी बड़ी, सरस मन माँगे ताजी बड़ी
कचेरी बैठन्ते सौहरे हमारे, लौंग करु अक बड़ी
मुढ़ले बैठन्ती सास हमारी, लौंग करुं अक बड़ी
मेरा मन माँगे ताजी बड़ी"। [3]

साध में सात वस्तुएँ महत्वपूर्ण मानी जाती हैं – मेहंदी, रोली, चूड़ी, आस- आटे की लम्बी मठड़ी, सिंदुर, (सिमरक) एवं कपड़े व कलावे सूत जो अत्यन्त शुभ माना जाता हैं। साध के गीतों में अन्य खाड्य पदार्थों की अपेक्षा मेवा को अधिक महत्व दिया जाता है। कहा जाता है कि मेवा का सेवन करने से ही भावी संतान प्रतिभावान होती है। साध पूजते समय निम्नलिखित गीत गाये जाने की प्रथा है –

"गंगाजल जमुना मैंने बोई थी चौलाई री
अरी सासू तो बूझे बहू कद की तू न्हाई री
अरी पड़वा तो पुत्रों मैं तो दोयज की न्हाई री....."। [4]

2) सीमन्तोन्नयन

सीमन्तोन्नयन तीसरा संस्कार है, जो पुंसवन के बाद माँ व बालक की कुशलता के लिए किया जाता है और इसमें माता- पिता पुत्र पाने की अपनी कामना प्रकट करते हैं। इस संस्कार के अंतर्गत स्त्री को आभूषणों व वस्त्रों से सुसज्जित कर उसकी

नारियल, सुपारी आदि पंचमेवों से व शुभ वस्तुओं से गोद भरी जाती है। सुश्री पुर्णिमा श्रीवास्तव ने पुंसवन संस्कार के संबंध में लिखा है कि गर्भाधान के बाद यह दूसरा संस्कार है जिसका उद्देश्य गर्भस्य शिशु को पुत्र रुप देने का है। शास्त्रों के अनुसार गर्भ में बालक के हिलने- चलने से पूर्व ही पुंसवन संस्कार संपादित किया जाना चाहिए। किंतु लौकिक परम्परा में इसे और सीमन्तोन्नयन संस्कार को प्राय: मिला दिया गया है। [5]

सीमन्तोन्नयन संस्कार का आयोजन प्रथम बार जब स्त्री गर्भाधान के सातवें मास में होता, तब किया जाता है। आज भी स्त्रियों में इसका रुप मिलता है जिसे लोक भाषा में 'साध- पूजना' कहते हैं। इसे शुध्द लौकिक भाषा में 'साध पहराना' भी कहते हैं। आज- कल साध- पूजने की प्रथा का प्रचलन कम हो गया है पर फिर भी कुछ परिवारों में अब भी मिलता है। इस अवसर पर गाये जाने वाले लोकगीतों में पुत्र- जन्म की कामना करते है साथ ही साथ में भावी माता को सौभाग्यशालिनी बताया जाता है और पुत्र- जन्म की कामना से ही प्रसन्नता प्रकट की जाती है। डॉ. सत्येंद्र ने सीमन्तोन्नयन संस्कार के संबंध में अपने पुस्तक 'ब्रज लोकसाहित्य का अध्ययन' में लिखा है– "यह संस्कार पुंसवन के बाद होता है। यह गर्भवती स्त्री के सातवें महीनें में किया जाता है। भावना एवं लौकिक आधार परम्परा की दृष्टि से मालवा, राजस्थान,ब्रज एवं बुन्देलखण्द आदि जन पदों के गीतों में बहुत कुछ साम्य है"।6 विभिन्न प्रदेशों में इसके अलग- अलग नाम एवं रुप है। साध पूजने का एक उदाहरण इस प्रकार से है –

"पहिले साध मोरी सास पुरई हैं
हमारे ससुर से बात चलइ हैं
और साध मोरी ससुरु पुरई हैं
वाम्हन बुलाव के सगुन पुछइ हैं"। [7]

पुत्र जन्म से पूर्व गर्भवती महिला के शरीर में परिवर्तन होता है। जैसे- जैसे बच्चे बढ़ने लगता है, गर्भवती महिला का पेट का आकार भी बढ़ता जाता है और गर्भवती के अंगों में दर्द होने लगता है। गर्भिणी स्त्री की देहयष्टि में प्रतिमास परिवर्तन होता है तथा इस परिवर्तन के साथ उसका कष्ट बढ़ते ही जाता है। इस गीत में इसका मनोरम वर्णन मिलता है –

"दरद उंगलियों में दरद पसलियों में,
दरद कमरिया के बीच अटारियों में,
पहला महीना जो लागा री, अटारियों में।
दूजा महीना जब लागा री.।
फूल झड़े फल लागा री, अटारियों में। [8]

यहाँ उल्लेखनीय है कि आदी जनजाति में जन्म के समय पूजा अनुष्ठान का विधि-विधान है परन्तु गीत गाने की प्रथा नहीं है। अत: खड़ीबोली लोकगीतों के साथ तुलना करने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

3) यज्ञोपवीत संस्कार

यज्ञोपवीत संस्कार को उपनयन संस्कार भी कहते है। कहीं- कहीं पर इसे जनेऊ संस्कार भी कहते है। बच्चा जब बारह वर्ष का हो जाता है तो उसका यज्ञोपवीत संस्कार किया जाता है। प्राचीन काल में यज्ञोपवीत संस्कार का बड़ा महत्त्व था। इस संस्कार के बाद ही बिद्यारम्भ किया जाता था। प्राचीन काल में यज्ञोपवीत संस्कार के उपरान्त बालक गुरु के पास गुरुकुल में भेज दिया जाता था। विद्यारम्भ के अवसर पर गाये जाने वाले गीत का एक उदाहरण निम्न है –

"मेरे पढ़ने को जावेंगे नंदलाल,पंडित बन आओजी
पाँच बरस को हो गयो लाल, कृपा करी किरपाल
भेजी पंडित बुलवाओ, पाटी पुजवाओ
कुछ दक्षिण देऊँ हाल"। [9]

जनेऊ संस्कार की अन्तिम प्रक्रिया में जनेऊ के समान बालक की कलाई में उसकी रक्षा के लिए पल्लव को बाँधा जाता है जिसे कंकन कहते हैं। जनेऊ के पश्चात किसी शुभ दिन पर बालक, उसकी माँ आदि गंगा के किनारे जाते है और कंकन छुड़ाते है। इसे कंकन छुड़ाना भी कहते है। इस अवसर पर गंगाजी की पूजा की जाती है और बालक या बरुआ के लिए गंगाजी से आशीर्वाद माँगते है। इसी अवसर पर गाये जाने वाले एक गीत इस प्रकार है –

"घूमत- घूमत में अइलो गंगा माई के आवास।
देई ना गंगा माई, आपन आसीस।
लेहु ना अमुक ना अमुक बरुआ, गमछी बिछाई"। [10]

आदी जनजाति में जनेऊ संस्कार नहीं होते है। जनेऊ का आदी जनजीवन में कोई स्थान नहीं है। आदी समाज में यज्ञोपवीत संस्कार का प्रचलन नहीं हैं। अत: हम खड़ीबोली के लोकगीतों के साथ इसकी तुलना नहीं कर सकते है।

4) नामकरण या दशूटन संस्कार

नामकरण संस्कार प्रमुख रुप से बालक के जन्म के दसवें दिन ही होता है परन्तु कभी-कभी बालक का जन्म अशुभ नक्षत्रों में होने के कारण इसे दसवें दिन न होकर अन्य किसी शुभ दिन पर भी किया जाता है। इस दिन सभी परिचित तथा संबंधी नवजात शिशु को पहली बार देखते है तथा प्यार से उपहार के रुप में कुछ न कुछ देते हैं और साथ ही साथ आशीर्वाद भी देते है। इस अवसर पर गाये जाने वाले एक गीत इस प्रकार से है –

"राजा हमारे ने वाग लगाए,
कलियाँ विनावै ननदोइया जी।
धीरे धीरे गजरे गुँदाओ,
ए ननद सुनेगी देगी गाली जी"। 11

इस अवसर पर कुँआ का पूजन किया जाता है जो स्त्रियों के लिए गौरव और प्रतिष्ठा का प्रतीक है। इस दिन पुत्रवती स्त्री पीला ओढ़ना ओढ़ती है। यह पीला वस्त्र जच्चा से 'छूछक' के रुप में आता है।

आदी जन- जाति में यह प्रथा प्रचलित नहीं है इसलिए गीत भी नहीं गाये जाते। अत: तुलना करना संभव नहीं है।

5) मुण्डन संस्कार

पुत्र जन्म से जुड़ा मुंडन संस्कार एक ऐसा संस्कार है जो आज तक हिंदुओ में प्रचलित है तथा सभी जातियों के लोगों में इसे कराया जाता है। बच्चे के जन्म के एक वर्ष, तीन वर्ष, पाँच वर्ष आदि में इसे किसी पवित्र स्थल अथवा देवस्थान में संपंन कराया जाता है। इसमें सिर के बीच में चुटिया छोड़कर सारे बालों को मूँड़ दिया जाता है। प्राय: यह कार्य नाई करते है तथा इस अवसर पर परिवार के सभी लोग उपस्थित रहते हैं। मुंडन से पहले बच्चे का बाल नहीं काटा जाता है। मुंडन के बाद से ही बच्चे का बाल काटना प्रारम्भ हो जाता है। इस अवसर पर गाँव की स्त्रियाँ झुण्ड बनाकर बालक और उसकी माता के साथ गंगा के किनारे पर जाती हैं। मुण्डन गीत का एक उदाहरण देखिये –

"ना बाबा बजना बजायो न सुजना बुलायो।
बड़े रे कलप कै लफरिया तौ चोरिया मंड़ायो॥
हम नाती बजना बजैबै, और सुजना बुलैबे।

बड़ेरे कलप कै लफरिया, मैं हरषि मुड़ैबै॥

आदी जनजाति में मुण्डन संस्कार का प्रचलन नहीं है। अत: तुलना करने की सम्भावना भी नहीं है।

6) कर्ण- छेदन संस्कार

मुण्डन संस्कार के बाद कर्ण- छेदन संस्कार होता है। इस संस्कार का भी अपना एक विशेष स्थान है। डॉ. सत्या गुप्ता इस संबंध में लिखते है – "मुण्डन के बाद कनछेदन- संस्कार होता है। लड़कियों के कान तो साधारणत: छिद जाते हैं और कोई विशेष आयोजन नहीं किया जाता, पर लड़कों का तो कनछेदन- संस्कार बहुत धुमधाम से मनाया जाता है। इसमें भी देन- लेन व खानपान की प्रथा प्रचलित है। गीत प्राय: 'ब्याही' ही गाये जाते है"। [12]

7) छठी (निष्क्रमण) संस्कार

पुत्र- जन्म के छह दिन बाद होने वाला यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्कार है। बालक के जन्म के छठे दिन जच्चा प्रसूति- गृह से बाहर निकलने लगती है। इसी दिन प्रसूता की पूजा होती है। छठी से पहले बच्चे को कपड़े नहीं पहनाये जाते हैं। सांयकाल में 'बै' की पूजा होती है। सौरगृह के दरवाजे पर एक गोले में थोड़ा अनाज, गुड़, व तीहल डाली जाती है और प्रसूता को शिशु के साथ बाहर निकाला जाता है। देवर बच्चे को प्रसूतिका- गृह से बाहर निकालते है। इस कार्य को करने के लिए देवर को नेग मिलता है। इस कार्य को 'बाहरी' भी कहते है। इसके बाद जच्चा को फिर से सौर- गृह में उसकी चारपाई के समीप सिरहाने की और पूथ्वी पर बिठाकर 'बै' की पूजा कराई जाती है जो गोबर की बनाकर लाई जाती है। 'सोवर' में जब तक गंदगी रहती है, उन्हें प्रेत- बाधा का भय रहता है। 'सतवाह' या छठी इसी प्रकार की एक निशाचरी है जिसको सन्तुष्ट करने के लिए प्रसव के छठे दिन प्रसूता से यह पूजा कराई जाती है –

"लवकुस मेरे लाल बन में जन्म काहे को लिया,
दसरथ ससुर आज घर होते लवकुस मेरे लाल,
आज अजुध्या लुटा देते --- ---------- आदि।
'टूट गया लन्टर टपक रहा पानी,
जच्चा के बैठन की बड़ी परेशानी
दाई आवै ललन जनावै
मांगे अपना नेग
नेगां के बदले उलीच दिया पानी
नाइयों के पालड़ा सा कुत्ता
पाड़ गेरेगा बहू मुजे डर लागै ----------। [13]

8) अन्नप्राशन संस्कार

बच्चे के जन्म के छह महिनें बाद यह संस्कार संपंन किया जाता है। इस छह महिनें के अन्तर्गत बच्चे के कुछ- कुछ दाँत निकलने लगते है। इस दिन बच्चे को पहली बार अन्न खिलाया जाता है। इस अवसर पर बच्चे को नएँ कपड़े पहनाते है तथा श्रृंगार किया जाता है। इस अवसर पर गाने वाले गीत की पंक्तियां देखिये –

"आज मोरे लीपन पोतन, औ अन्नप्रासन हो।
सास- अरगन नेवतह परगत, नैहर सासुर
औ अजि याउर और ननियाउर रे"। [14]

अन्नप्राशन के अवसर पर मामा नये कटोरे में शिशु को पहली बार अन्न खिलाते है। इस दिन मामा शिशु को खीर खिलाकर अन्नप्राशन का संस्कार सम्पन्न किया जाता है। प्राय: आजकल अन्नप्राशन संस्कार का प्रचलन समाप्त हो गया है। आदी जनजाति के यहां भी अन्नप्राशन संस्कार का विधान नहीं है।

सहायक ग्रंथ सूची

1. सत्या गुप्ता, खड़ी बोली का लोक साहित्य, हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, 1964, पृ.32
2. वही, पृ.37
3. वही, पृ.38
4. वही, पृ.37
5. पूर्णिमा श्रीवास्तव, लोकगीतों में समाज, मंगल प्रकाशन, जयपुर, 1991, पृ.60
6. सत्येन्द्र, ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन, पृ.119
7. उपरि संख्या – 1, पृ.60
8. कृष्णदेव उपध्याय, हिंदी प्रदेश के लोकगीत, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद- 1990, पृ. 297- 298
9. ऊषा मोजा, कश्मीरी तथा हिंदी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध- प्रबंध, पृ.70
10. परवीन निजाम अंसारी, लोक साहित्य के विविध आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, पृ. 175- 176
11. उपरि संख्या – 8, पृ. 299
12. उपरि संख्या – 1, पृ. 45
13. कविता त्यागी, कौरवी प्रदेश की लोक संस्कृति, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1995, पृ. 56- 57
14. राम नरेश त्रिपाठी, हमारा ग्राम साहित्य, पृ. 224